



दक्षिण, मध्य और पश्चिम एशियाई लोग तथा जलवायु परिवर्तन

समुद्र के स्तर में वृद्धि से लेकर इराक और भारत में गर्मियों की लहरें, मध्य एशिया में सूखा, पाकिस्तान और बांग्लादेश में बाढ़ तक जलवायु परिवर्तन का दक्षिण, मध्य और पश्चिम एशिया पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा है। सबसे अधिक प्रभाव इन क्षेत्रों के गरीब देशों और समुदायों पर पड़ा है और पड़ेगा, जो अपनी सुरक्षा करने में सबसे कम सक्षम हैं। इन क्षेत्रों में लोग पहले से ही व्यापक स्तर पर फैली बीमारियों और कृषि उत्पादन में गिरावट से पीड़ित हैं।

जलवायु परिवर्तन को पहले से ही दीर्घकालीन पर्यावरणीय संकट के संदर्भ में महसूस किया जा रहा है, जो मुख्य रूप से इराक, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, सीरिया और यमन के युद्धों का परिणाम है। इन युद्धों ने पहले ही इन देशों के प्राकृतिक वातावरण को बुरी तरह खराब कर दिया है। उन्होंने कृषि भूमि को बर्बाद कर दिया है, मिट्टी को दूषित कर दिया है, मरुस्थलीकरण को बढ़ा दिया है, पानी को प्रदूषित कर दिया है, वन्यजीवों के आवास को नष्ट कर दिया है और ये युद्ध निश्चित रूप से लाखों नागरिकों की मौत के साथ-साथ बड़े पैमाने पर उनके स्थानांतर (देशांतर) का भी कारण बने हैं।

यह विनाश का चक्र है। युद्ध से पर्यावरण खराब होता है और परिणामस्वरूप जलवायु परिवर्तन तेजी से होता है। जलवायु परिवर्तन के कारण सूखा और अकाल पड़ता है। फिर, इन परिस्थितियों में अरबों और मुसलमानों को निशाना बनाकर हिंसा, युद्ध, इस्लामोफोबिया और नस्लवाद आसानी से भड़काया जाता है। इन सबके कारण एकजुट होकर युद्ध और पर्यावरण पर इसके प्रभाव को समाप्त करना अधिक कठिन हो जाता है।

उपरोक्त सबके बावजूद स्थिति आशाजनक है। जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को सीमित करना और पर्यावरण को पूरी तरह से पुनर्स्थापित करना संभव है।

बड़ी समस्याओं के लिए बड़े समाधान की आवश्यकता होती है। दक्षिण, मध्य और पश्चिम एशिया के लोग ऐसे समाधान खोजने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, जो किसी भी इंसान को पीछे न छोड़ें, एक समूह को दूसरे समूह के विरुद्ध खड़ा न करें, लोगों के एक समूह को दूसरे से लाभ उठाकर अपना लाभ हासिल करने की अनुमति न दें, जो विभाजन की बजाय सहयोग पर ध्यान केंद्रित करें,



जो अधिक से अधिक लोगों को एकजुट करें और संपूर्ण जीवन की शाश्वतता कायम रखने के लिए निर्णायक कार्यों पर ध्यान केंद्रित करें।

लोगों को इस बारे में भी जागरूक होने की जरूरत है कि दमनकारी नीतियों से उन्हें कहां “फायदा” हुआ है, और उन भ्रमों से उबरना होगा, जिनके कारण वे उन दमनकारी नीतियों को चुनौती नहीं दे रहे हैं।

संपूर्ण जीवसृष्टि की शाश्वतता (सस्टेनिंग ऑल लाइफ) ऐसे बड़े समाधानों को पाने में (के विकास

में) सहायता के लिए व्यक्तियों और संगठनों को साधन प्रदान करता है। इन साधनों का उपयोग करके, लोग भावनात्मक चोटों से उबरने में सक्षम होते हैं। उदाहरण के लिए, अपनी व्यक्तिगत कहानियाँ बताकर कि वे निम्न बातों से किस प्रकार प्रभावित हुए हैं:

- युद्ध और अन्य हिंसा
- विनाशकारी गतिविधियाँ



‘संपूर्ण जीवसृष्टि की शाश्वतता’ (सस्टेनिंग ऑल लाइफ – एसएएल) प्राथमिक स्तर पर काम करनेवाला एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है, जो लोगों के आपसी भेदभाव को समाप्त करने के संदर्भ में जलवायु आपातकाल को समाप्त करने के लिए काम कर रहा है। ‘नस्लवाद के खिलाफ संगठन’ (यूनाइटेड टू एंड रेसिज्म - यूईआर) में अलग-अलग देशों के विविध प्रकार के लोग शामिल हैं, जो दुनिया में नस्लवाद को खत्म करने के लक्ष्य के साथ-साथ अन्य सभी समूहों के प्रयासों का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। यूईआर और एसएएल ‘पुनर्मूल्यांकन समुपदेशन’ की परियोजनाएँ हैं और उनके साधनोंका उपयोग करते हैं। ‘पुनर्मूल्यांकन समुपदेशन’ एक ऐसा भली-भाँति परिभाषित सिद्धांत और अभ्यास है, जो उत्पीडन और अन्य प्रकार के दुःखों से उत्पन्न भावनात्मक नुकसान से स्वयं को मुक्त करने में सभी आयुवर्ग और पृष्ठभूमि वाले लोगों की सहायता करता है, ताकि वे एक-दूसरे की प्रभावपूर्ण तरीके से मदद कर सकें। बारी-बारी से एक-दूसरे को सुनने और दुःखद भावनाओं को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करने से लोग पुराने दुखों से उबर सकते हैं और सोचने, बोलने तथा दूसरों को संगठित कर एक ऐसी दुनिया के निर्माण का नेतृत्व करने में सक्षम हो सकते हैं, जिसमें मनुष्य और अन्य जीवमात्र को महत्व देने के साथ ही पर्यावरण को भी पुनर्स्थापित और संरक्षित किया जाता है। फिलहाल ‘पुनर्मूल्यांकन समुपदेशन’ 95 देशों में मौजूद है।



SustainingAllLife.org



UnitedToEndRacism.org



sustaining_all_life



@sustainallife



SustainingAllLife



बसू आर चिंता



- इस्लामोफ़ोबिया
- शरणार्थी संकट और देशान्तरण
- गरीबी
- सूखा, बाढ़ और मौसम की अन्य तीव्र स्थितियाँ
- जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता

घोटों से उबरने से स्पष्ट सोच और अधिक सटीक दृष्टिकोण आते हैं। तब एक संयुक्त पर्यावरणीय

आंदोलन का निर्माण करना अधिक संभव है। एक संयुक्त शक्ति के रूप में, दक्षिण, मध्य और पश्चिम एशिया के लोग पृथ्वी पर संपूर्ण जीवन की शाश्वतता बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।





“संपूर्ण जीवसृष्टि की शाश्वतता और नस्लवाद के खिलाफ संगठन” का कार्य

यदि हम अगले पांच से दस वर्षों में अपनी अर्थव्यवस्था, अपनी ऊर्जा प्रणालियों और अपने जीवन में कुछ बहुत बड़े बदलाव करें, तो मानव-जनित जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को सीमित करना और पर्यावरण को पुनर्स्थापित करना संभव है। ‘संपूर्ण जीवसृष्टि की शाश्वतता’ (सस्टेनिंग ऑल लाइफ) और ‘नस्लवाद के खिलाफ संगठन’ (यूनाइटेड टू एंड रेसिज्म) का मानना है कि नस्लवाद, स्थानीय लोगों के नरसंहार, वर्गवाद, लिंगवाद और अन्य उत्पीड़नों (oppressions) पर जब हम एक साथ विचार करेंगे, तभी पर्यावरण संकट का समाधान हो सकता है। पर्यावरण के विनाश और जलवायु परिवर्तन का प्रभाव इन उत्पीड़नों द्वारा लक्षित समूहों और अन्य कमजोर आबादी (बुजुर्ग, विकलांग और बहुत छोटे लोगों की आबादी सहित) पर सबसे अधिक पड़ता है। आवश्यक परिवर्तन लाने के लिए जलवायु परिवर्तन, नस्लवाद और शोषण के प्रभावों से लड़ने वाले दुनिया भर के हर पृष्ठभूमि के लोगों के बीच एक बड़े पैमाने पर आंदोलन की आवश्यकता होगी।

‘संपूर्ण जीवसृष्टि की शाश्वतता’ (सस्टेनिंग ऑल लाइफ) और ‘नस्लवाद के खिलाफ संगठन’ (यूनाइटेड टू एंड रेसिज्म) मानता है कि एक पर्याप्त बड़े और शक्तिशाली आंदोलन के निर्माण में आने वाली बाधाएँ इस प्रकार हैं - (1) राष्ट्रों और जन-समुदायों के बीच लंबे समय से चला आ रहा विभाजन (सामान्यतः उत्पीड़न और विशेष रूप से नस्लवाद और वर्गवाद के कारण होनेवाला विभाजन), (2) यह व्यापक भावना कि अब बहुत देर हो चुकी है और कोई भी कार्रवाई अप्रभावी होगी, (3) जलवायु संबंधी आपात स्थिति को स्वीकार न करना या उससे जुड़ने में विफलता, और (4) पर्यावरणीय संकट तथा हमारी आर्थिक प्रणाली की विफलताओं के आपसी संबंधों को प्रभावशाली तरीके से सुलझाने में आनेवाली कठिनाइयाँ। ऐसे मुद्दों के साथ ही अन्य मुद्दों को सुलझाने के लिए भी “सस्टेनिंग ऑल लाइफ और यूनाइटेड टू एंड रेसिज्म” काम करता है।

उत्पीड़न की भूमिका

हमारे समाज का आर्थिक और राजनीतिक स्वरूप ऐसा है कि विकास और लाभ की मांग करते समय जनसामान्य, अन्य सजीवों और पृथ्वी के प्रति सम्मान की भावना नगण्य रह जाती है। इसका परिणाम शोषण और उत्पीड़न है। जबरदस्त अन्याय करने, संसाधनों तक पहुँच सीमित करने, और अरबों लोगों के जीवन को नुकसान पहुँचाते हुए उत्पीड़न (जैसे नस्लवाद, वर्गवाद, लिंगवाद और युवा लोगों का उत्पीड़न) सभी को शिकार बनाते हैं। एक बार उत्पीड़न का निशाना बनने के बाद हम दूसरों के साथ वैसा ही चोट पहुँचानेवाला बर्ताव करते हैं, जैसा हमने अनुभव किया होता है। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप हम मानसिक और भावनात्मक नुकसान (harm) का अनुभव करते हैं। हमारा अनुभव यह है कि भले ही लोग उत्पीड़क कार्य करने के लिए प्रेरित होते हों, पर ऐसा व्यवहार करना उनकी मूल प्रवृत्ति नहीं होती, बल्कि जब कोई व्यक्ति भावनात्मक रूप से घायल होता है, तभी यह प्रेरणा उत्पन्न होती है।

आर्थिक शोषण को स्थापित करने और उसे बनाए रखने के लिए उत्पीड़क समाज इस संवेदनशीलता का चालाकी से उपयोग करता है।

व्यक्तिगत नुकसान से उबरने का महत्व

उत्पीड़न और अन्य दुखद अनुभवों से हमारा जो मानसिक और भावनात्मक नुकसान होता है, उससे हमारी स्पष्ट रूप से सोचने की क्षमता बाधित होती है और यह नुकसान लोगों के समूहों को एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा कर देता है। इससे जलवायु आपात स्थिति के बारे में सोचना और उस पर प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया देना हमारे लिए कठिन हो जाता है।

उत्पीड़न को बनाए रखने रखने और अन्य दुखदायक व्यवहार को जन्म देने में सहायक चोटों से उबरना न तो तुरंत हो पाता है और न यह आसान काम है। हममें से कई लोग उबरने की इस व्यक्तिगत प्रक्रिया (personal healing process) का विरोध करते हैं। हो सकता है कि स्वयं को सुन्न करते हुए हम इस उत्पीड़नजन्य नुकसान को अनदेखा कर दें। हममें से कुछ लोग ऐसा भी मानते हैं कि हम कभी भी इस नुकसान से मुक्त नहीं होंगे। ‘संपूर्ण जीवसृष्टि की शाश्वतता’ (सस्टेनिंग ऑल लाइफ) और ‘नस्लवाद के खिलाफ संगठन’ (यूनाइटेड टू एंड रेसिज्म) में हमने सीखा है कि खुद को इन चोटों से मुक्त होना और प्रभावी आयोजन में आने वाली बाधाओं को दूर करना संभव है। यदि कोई हमारी बात ध्यान से सुनता है और हमें दुःख, भय और अन्य दर्दनाक भावनाओं को व्यक्त करने की अनुमति देकर उसके लिए प्रोत्साहित करता है, तो हम दुखद अनुभवों से उबर (heal) सकते हैं। यह हमारी प्राकृतिक रूप से उबरने की प्रक्रियाओं के माध्यम से होता है, जैसे कि बात करना, रोना, कांपना, गुस्सा व्यक्त करना और हंसना।

एक सहायक नेटवर्क में भावनात्मक दर्द को दूर करके, हम एकजुट, आशावान, विचारशील, आनंदमय और प्रतिबद्ध रह सकते हैं। परिणामस्वरूप जलवायु परिवर्तन और नस्लवाद के प्रभावों को रोकने के हमारे आंदोलन चलाने के लिए हमें ताकत मिलती है।



Sustaining All Life



अधिक जानकारी के लिए देखें:

www.sustainingalllife.org या www.unitedtoendracism.org
या लिखें: Sustaining All Life/United to End Racism
19370 Firlands Way N, Shoreline, WA 98133-3925 USA
ईमेल: sal@rc.org टेलीफोन: +1-206-284-0311